२.तीर्थंकर और भगवान

प्रस्तुतकर्ता-
प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

भगवान किसे कहते हैं?

- जो वीतरागी
- और सर्वज्ञ हैं,

वे सभी भगवान हैं।

वीतरागी किसे कहते है?

- वीत + राग = बीत गया है राग जिनका
- जिनके मोह, राग, द्वेष नष्ट हो गये हैं

मोह किसे कहते हैं?

पर (दूसरे) में अपनापन

राग किसे कहते हैं?

किसी को भला जानकर चाहना

द्वेष किसे कहते हैं?

किसी को बूरा जानकर दूर करना चाहना

सर्व प्रथम
मोह नष्ट
होता हैं

फिर राग - द्वेष

इसलिये वीतरागी होने से पहले वीतद्वेषी,
वीतमोही हो जाते हैं

सर्वज्ञ किसे कहते है?

- सर्व + ज्ञ =

सभी को + जानें

सर्व मतलब

सभी पदार्थ

सभी का
भूत,भविष्य,
वर्तमान

एक साथ जानें

सिद्ध भगवान

वीतरागी सर्वज्ञ होते हैं

अरिहंत भगवान

वीतरागी सर्वज्ञ तो होते ही हैं

साथ ही हितोपदेशी भी हो सकते हैं

हितोपदेशी किसे कहते है?

- हित + उपदेश =
जो हित(अर्थात सुखी होने) का उपदेश देवें
- जो अच्छा और सच्चा उपदेश देवें

प्रश्न?

- किस क्रम से ये गुण प्रकट होते हैं?
- सर्वज्ञता वीतरागता के पहले क्यों नहीं?
- हितोपदेशी वीतरागता-सर्वज्ञता के पहले क्यों नहीं?

तीर्थंकर किसे कहते हैं ?

- जो धर्मतीर्थ (मुक्ति का मार्ग) का उपदेश देते हैं,
- समवशरण आदि विभूति से युक्त होते हैं
- और जिनको तीर्थंकर नामकर्म नाम का महापुण्य का उदय होता है
- जिनके कल्याणक होते हैं

तीर्थंकर कितने होते हैं ?

२४ होते हैं

- १.ऋषभदेव
- २.अजितनाथ
- ३.सम्भवनाथ
- ४.अभिनन्दन
- ५.सुमतिनाथ
- ६. पद्मप्रभ
- ७. सुपार्श्वनाथ
- ८. चन्द्रप्रभ
- ९. पुष्पदन्त
- १०.शीतलनाथ
- ११.श्रेयान्सनाथ
- १२.वासुपूज्य
- १३.विमलनाथ
- १४.अनन्तनाथ
- १५.धर्मनाथ
- १६.शान्तिनाथ
- १७.कुन्थुनाथ
- १८.अरनाथ
- १९.मल्लिनाथ
- २०.मुनिसुव्रत
- २१.नमिनाथ
- २२.नेमिनाथ
- २३.पार्श्वनाथ
- २४.महावीर

२४ तीर्थंकरों के नाम का छंद

ऋषभ१ अजित२ सम्भव३ अभिनन्दन४,
सुमति५ पदम६ सुपार्श्व७ जिनराय।
चन्द्र८ पुहुप९ शीतल१० श्रेयान्स११ जिन,
वासुपूज्य१२ पूजित सुरराय।।
विमल१३ अनन्त१४ धर्म१५ जस उज्वल,
शान्ति१६ कुन्थु१७ अर१८ मल्लि१९ मनाय।
मुनिसुव्रत२० नमि२१ नेमि२२ पार्श्व२३ प्रभु,
वर्द्धमान२४ पद पुष्प चढ़ाय।।

तीर्थंकर और भगवान में समानता

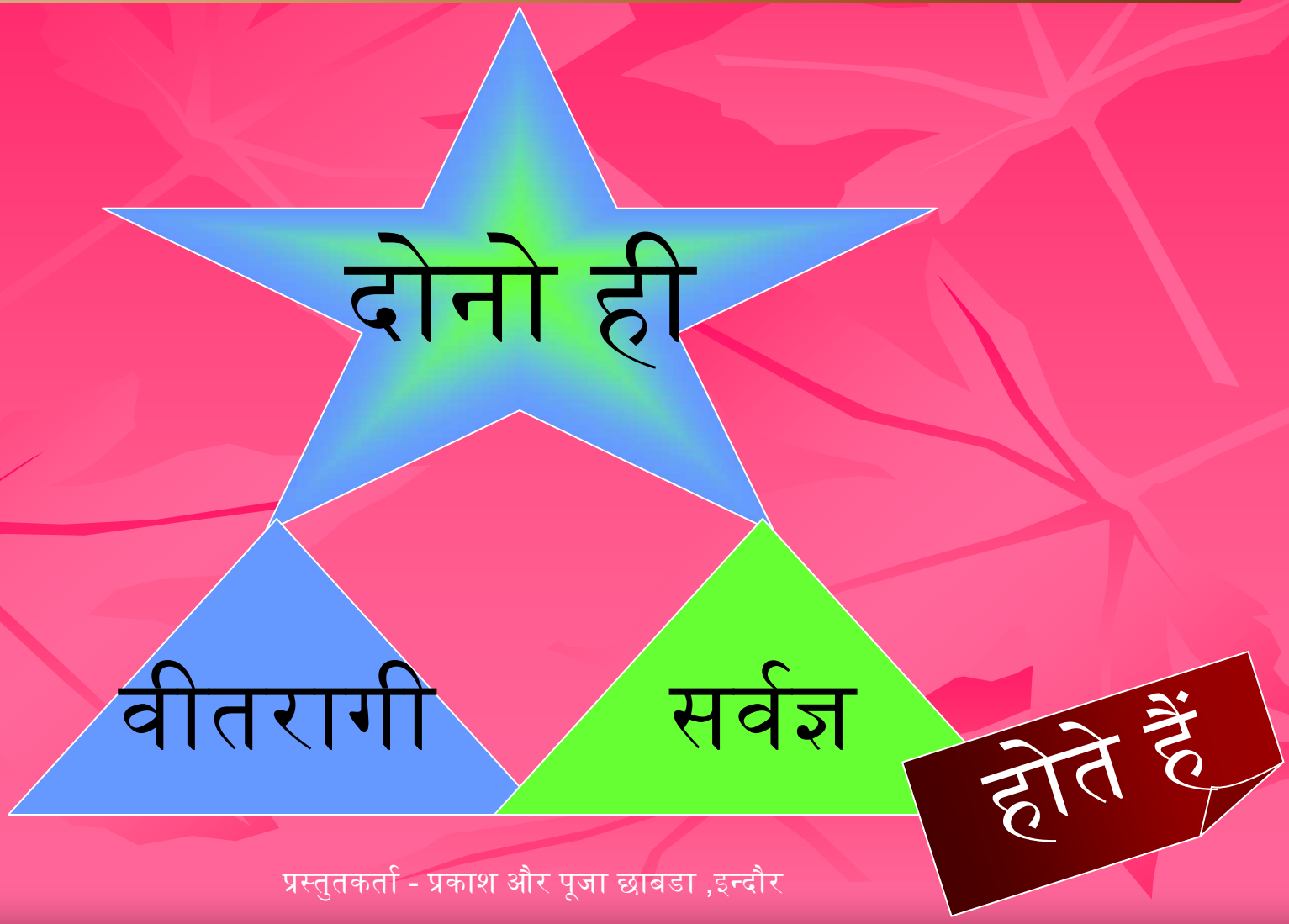

तीर्थंकर और भगवान में अंतर

भगवान	तीर्थंकर
सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते	सभी तीर्थंकर भगवान होते हैं
भगवान अरिहंत-सिद्ध दोनो पद पर होते हैं	तीर्थंकर सिर्फ अरिहंत पद पर ही होते है
भगवान अंनत होते हैं	तीर्थंकर २४ होते हैं

तीर्थंकर और भगवान में अंतर

भगवान	तीर्थंकर
भगवान हितोपदेशी हो भी, न भी हो	तीर्थंकर अनिवार्य रुप से हितोपदेशी होते हैं
भगवान की धर्म सभा को गंध कुटी कहते है	तीर्थंकर की धर्म सभा को समवशरण कहते है

तीर्थंकर और भगवान में अंतर

भगवान	तीर्थंकर
भगवान किसी कर्म के उदय से नहीं बनते	तीर्थंकर तीर्थंकर नामकर्म का फल है
भगवान के कल्याणक नहीं होते	तीर्थंकरों के कल्याणक होते हैं

इनके जानने से क्या लाभ है ?

इनके उपदेश को समझकर
उस पर चलने से हम सब भी
भगवान बन सकते हैं।